पाठ्यपुस्तक : 'स्पर्श' भाग 2 (काव्य खंड)

साखी (कबीर)

पाठ का परिचय

'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का तद्भव रूप है। साक्षी शब्द का अर्थ है–प्रत्यक्ष या अनुभव से प्राप्त ज्ञान। प्रस्तुत साखियों में कबीर ने जीवन के अनुभवों से प्राप्त ज्ञान को अभिव्यक्त किया है। इनमें मधुर वाणी के सकारात्मक प्रभाव और ईश्वर की सर्वव्यापकता का प्रतिपादन किया गया है। पाठ में ईश्वर-प्राप्ति में अहंकार की बाधा, साधना के कष्ट, प्रेम के महत्त्व और आलोचकों की संगति के लाभ को बहुत ही सहज और सरल भाषा में उदाहरणोंसहित व्यक्त किया गया है।

साखियों का भावार्थ

साखी

1. ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।
भावार्थ–मधुर वचन का महत्त्व बताते हुए कबीरदास कहते हैं कि मीठी वाणी का प्रभाव बहुत सकारात्मक होता है; अतः हमें मन से अहंकार त्यागकर सदैव मधुर वचन ही बोलने चाहिए। इससे अपना शरीर भी शांत रहता है और दूसरों को भी सुख प्राप्त होता है।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहिं।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि जिस प्रकार कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है, लेकिन वह उसे वन में इधर-उधर खोजता फिरता है; उसी प्रकार ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करता है, लेकिन वह उसे बाहर मंदिर, मस्ज़िद, तीर्थ आदि स्थानों पर खोजता फिरता है। इसी अज्ञानता के कारण मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो पाती।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहिं।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहिं।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि जब तक मेरे हृदय में अहंकार था, तब तक मुझे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई और अब ईश्वर की प्राप्त हो गई है तो अहंकार नहीं रहा है। ज्ञानरूपी दीपक से मेरा अज्ञानरूपी अंधकार नष्ट हो गया और मुझे पता चल गया कि अहंकार के रहते कभी ईश्वर-प्राप्ति नहीं हो सकती।

4. सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि सांसारिक लोग खाने-पीने और सोने में मस्त हैं; क्योंकि वे इसी को सुख मानते हैं। कबीर ईश्वर का भक्त है, इसलिए वह ईश-साधना में जागता है, कष्ट उठाता है और ईश्वर के विरह में आँसू बहाता है।

5. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि जब भक्त के शरीर में परमात्मा के विरह का सर्प बस जाता है तो वह किसी भी मंत्र आदि के उपाय से बाहर नहीं निकलता। परमात्मा के वियोग में या तो वह भक्त जीवित ही नहीं रहता और यदि जीवित रहता है तो पागल हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सच्चे भक्त के लिए ईश्वर-विरह असहनीय होता है।

6. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि जो व्यक्ति हमारी निंदा करता है, अर्थात् हमारी बुराइयों को कहने का साहस रखता है, हमें उसे सदैव अपने पास अपने आँगन में उसका स्थायी निवास बनाकर रखना चाहिए। वह साबुन और पानी के स्नान के बिना ही हमारे स्वभाव को निर्मल बना देता है; क्योंकि वह हमें हमारे अवगुणों से अवगत कराता है और हम उन अवगुणों को दूर कर लेते हैं।

7. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि यह दुनिया बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़-पढ़कर मर गई, लेकिन कोई भी पूर्ण ज्ञानी नहीं बन सका। जो प्रेमस्वरूप एक ही अक्षर 'ब्रह्म' को पढ़ लेता है और उसके तत्त्व को समझ लेता है, वही परम ज्ञानी हो जाता है।

8. हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।
भावार्थ–कबीरदास कहते हैं कि हमने भक्ति की मशाल लेकर अपने मोह-माया और विषय-वासनाओं को जला दिया है। अब हम उसकी भी मोह-माया को जला देंगे, जो हमारे साथ ईश्वर-भक्ति के मार्ग पर चलेगा।

शब्दार्थ

बाँणी = बोली। **आपा** = अहं (अहंकार)। **सीतल** = शीतल (ठंडा, अच्छा)। **औरन** = दूसरों को। **कुंडली** = नाभि। **मृग** = हिरन। **घटि घटि** = कण कण में। **मैं** = अहं (अहंकार)। **सुखिया** = सुखी। **बिरह** = बिछुड़ने का गम। **भुवंगम** = भुजंग, साँप। **बौरा** = पागल। **निंदक** = निंदा करने वाला। **नेड़ा** = निकट। **आँगणि** = आँगन। **सुभाइ** = स्वभाव। **मुवा** = मरना। **अषिर** = अक्षर। **पीव** = प्रिय। **जाल्या** = जलाया। **मुराड़ा**= जलती हुई लकड़ी, ज्ञान। **जालौं** = जलाऊं। **तास का** = उसका।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।
कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहिं।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं।।

1. अपने तन को शीतलता और दूसरों को सुख कैसी वाणी देती है–

(क) मीठी (ख) कड़वी

(ग) तीखी (घ) फीकी।

2. 'मन का आपा खोइ' का अर्थ है–

(क) मन को दुखी करना

(ख) मन को प्रसन्न करना

(ग) मन का अहंकार दूर करना

(घ) मन को वश में करना।

3. 'मृग वन में' क्या ढूँढ़ता है–

(क) हरी घास (ख) रहने का स्थान

(ग) कस्तूरी (घ) पानी।

4. दुनिया क्या नहीं देखती है–

(क) घड़े में रखे जल को

(ख) दूसरों के सुख को

(ग) दूसरों की अच्छाई-बुराई को

(घ) हृदय में स्थित ईश्वर को।

5. कस्तूरी किस पशु की नाभि में रहती है–

(क) बंदर की नाभि में (ख) सिंह की नाभि में

(ग) मृग की नाभि में (घ) बकरी की नाभि में।

उत्तर— 1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)।

(2) जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।
सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।।

1. जब मैं था, तब कौन नहीं था–

(क) तुम नहीं थे (ख) हरि नहीं थे

(ग) अँधियारा नहीं था (घ) कोई नहीं था।

2. 'अँधियारा' किसका प्रतीक है–

(क) कालिमा (ख) कलंक

(ग) अज्ञान (घ) रात्रि।

3. काव्यांश में दुखिया कौन है–

(क) संसार के लोग (ख) कबीरदास

(ग) तुलसीदास (घ) गरीब लोग।

4. 'खायै अरू सोवै' का भाव है–

(क) सांसारिक सुखों में डूबे रहना

(ख) खाकर सो जाना

(ग) कुछ न खाना

(घ) हमेशा सोते रहना।

5. दीपक देखने से क्या हुआ–

(क) अँधियारा मिट गया (ख) रास्ता मिल गया

(ग) धन मिल गया (घ) बल मिल गया।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)।

(3) निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।
पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

1. निंदक को कहाँ रखने के लिए कहा गया है–

(क) अपने से दूर (ख) कारागृह में

(ग) अपने पास (घ) आँगन से दूर।

2. साबुन और पानी के बिना कौन स्वभाव को निर्मल कर देता है–

(क) माता (ख) पिता

(ग) गुरु (घ) निंदक।

3. पोथी पढ़-पढ़कर भी संसार में कोई क्या नहीं बन पाया–

(क) राजनीतिज्ञ (ख) संन्यासी

(ग) ज्ञानी (घ) राजा।

4. पंडित कैसे बना जा सकता है–

(क) शास्त्रों को पढ़कर (ख) पूजा-पाठ करके

(ग) गुरु की सेवा करके (घ) प्रेम का एक अक्षर पढ़कर।

5. 'निंदक नेड़ा राखिये' में अंलकार है–

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) यमक।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए*–

1. 'साखी' के कवि कौन हैं–

(क) रहीम (ख) कबीर

(ग) मीरा (घ) रैदास।

2. कबीर का जन्म कहाँ हुआ–

(क) मथुरा में (ख) अयोध्या में

(ग) काशी में (घ) मगहर में।

3. कबीर के गुरु कौन थे–

(क) रामदास (ख) रामानंद

(ग) परमानंद (घ) देवानंद।

4. कस्तूरी कहाँ रहती है–

(क) मृग की नाभि में (ख) कमल के फूल में

(ग) सीप में (घ) पत्थर में।

5. हरि के प्राप्त होने पर क्या समाप्त हो गया–

(क) अँधेरा (ख) अहंकार

(ग) प्यार (घ) अज्ञान।

6. 'दीपक' किसका प्रतीक है–

(क) प्रकाश का (ख) अंधकार का

(ग) ज्ञान का (घ) अज्ञान का।

7. कौन खाता और सोता है–

(क) कबीर (ख) भक्त

(ग) संसार (घ) इनमें कोई नहीं।

8. दुःखी कौन है–

(क) संसार (ख) नास्तिक

(ग) वैरागी (घ) कबीर।

9. विरहरूपी सर्प कहाँ रहता है–

(क) बिल में (ख) वन में

(ग) तन में (घ) मन में।

10. राम-वियोगी की क्या गति होती है–

(क) वह सुखी हो जाता है (ख) वह पागल हो जाता है

(ग) वह मुक्त हो जाता है (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. कबीर ने किसे पास रखने के लिए कहा है–

(क) निंदक को (ख) प्रशंसक को

(ग) मित्र को (घ) शत्रु को।

12. मीठी वाणी से औरों को क्या प्राप्त होता है–

(क) धन (ख) बल

(ग) सुख (घ) दुःख।

13. **कबीर ने ईश्वर का निवास कहाँ बताया है–**

(क) स्वर्ग में (ख) पाताल में

(ग) आकाश में (घ) सृष्टि के कण-कण में।

14. **विरहरूपी सर्प पर किसका प्रभाव नहीं होता–**

(क) विष का (ख) मंत्र का

(ग) जल का (घ) वायु का।

15. **कबीर के अनुसार संसार में सुखी कौन है–**

(क) जो भजन करता है (ख) जो पैसा कमाता है

(ग) जो खाता और सोता है (घ) जो पढ़ता-लिखता है।

16. **'पोथी पढ़ि-पढ़ि' में अलंकार है–**

(क) यमक (ख) अनुप्रास

(ग) श्लेष (घ) उपमा।

17. **कबीर ने मुराड़ा लेकर किसका घर जलाया–**

(क) मित्र का (ख) पड़ोसी का

(ग) अपना (घ) किसी का नहीं।

18. **'अषिर' का क्या अर्थ है–**

(क) प्रेम (ख) पंक्ति

(ग) पुस्तक (घ) अक्षर।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (ग) **7.** (ग) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (ख) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (घ) **14.** (ख) **15.** (ग) **16.** (ख) **17.** (ग) **18.** (घ)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न
काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : **ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?**

उत्तर : ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, लेकिन आडंबरों और अज्ञान में फँसे होने के कारण हम उसे नहीं देख पाते। जिस प्रकार कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है और वह उसे पाने के लिए वन में इधर-उधर भटकता रहता है, उसी प्रकार ईश्वर संसार के कण-कण में व्याप्त है, फिर भी हम उसे मंदिर, मस्ज़िद और तीर्थ आदि स्थानों में ही खोजने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि हम उसे देख नहीं पाते।

प्रश्न 2 : **'सुखिया बस संसार है, खायै अरू सोवै। दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रौवै।'**

साखी के संदर्भ में कबीर के दुखी और जाग्रत होने के कारण लिखिए। क्या जागना भी दुख का कारण हो सकता है? स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : इस साखी का भाव यह है कि सांसारिक लोगों की दृष्टि में खाना-पीना और सोना ही सुख है। कबीर सांसारिकता से दूर हैं। वे साधना में लीन हैं; अतः वे दुखी हैं और ईश्वर के विरह में जागते हैं। जागना भी दुख का कारण हो सकता है। यहाँ जागना ईश्वर की साधना का प्रतीक है। साधना कष्टदायी होती है। कष्ट में नींद नहीं आती है; अतः यहाँ जागना दुख का कारण है।

प्रश्न 3 : **संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? कबीर की साखी में 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इनका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2016)***

उत्तर : कबीर के अनुसार संसार की दृष्टि में वह व्यक्ति सुखी है, जो भरपेट खाता-पीता है और सो जाता है। ईश्वर-साधना के कठिन मार्ग पर चलने वाला भक्त दुखी है, जो ईश्वर-मिलन के लिए जागता है और उसके वियोग में आँसू बहाता है। यहाँ 'सोना' ईश्वर के प्रति उदासीनता का और 'जागना' ईश्वर-प्राप्ति के लिए प्रयास करने का प्रतीक है। इन शब्दों का प्रयोग यह बताने के लिए किया गया है कि संसारीजन हीरे जैसे अनमोल मानव-जीवन को पशुओं की तरह खाकर और सोकर गँवा देते हैं, जबकि साधकजन इसे ईश्वर की साधना में लगाते हैं और आत्मोत्थान कर लेते हैं।

प्रश्न 4 : **मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?**

उत्तर : सभी इंद्रियाँ अपने अनुकूल विषय को पाकर सुख का अनुभव करती हैं। मधुर शब्द कानों के अनुकूल विषय हैं, इसलिए मीठी वाणी सुनकर सभी को सुख होता है। मधुर वचन बोलने वाले के मन से अहंकार समाप्त हो जाता है। अहंकार नष्ट हो जाने से क्रोधरूपी अग्नि समाप्त हो जाती है। इस प्रकार व्यक्ति का तन-मन शांत और शीतल रहता है।

प्रश्न 5 : **अपने स्वभाव को निर्मल करने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?**

उत्तर : अपने स्वभाव को निर्मल करने का कबीर ने यह उपाय बताया है कि हमें अपने निंदक को सदैव अपने पास रखना चाहिए; क्योंकि वह हमें हमारी बुराइयों से अवगत कराता है। हम उन बुराइयों को दूर कर लेते हैं और हमारा स्वभाव निर्मल हो जाता है।

प्रश्न 6 : **कबीर के अनुसार दुखी व्यक्ति कौन है?**

उत्तर : कबीर के अनुसार, दुखी वह व्यक्ति है जो भगवान के प्रेम में पड़ गया है। वह दिन-रात ईश्वर-मिलन के लिए जागता है और तड़पता है। भोगी संसार सुखी है, वह खाता है और सोता है।

प्रश्न 7 : **कबीर ने निंदक को पास रखने की सलाह क्यों दी है? क्या यह सलाह आपको उचित प्रतीत होती है? कारणसहित स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : निंदक व्यक्ति हमारे स्वभाव को निर्मल कर देता है; इसलिए कबीर ने निंदक को पास रखने की सलाह दी है। हमें यह सलाह उचित प्रतीत होती है, क्योंकि निंदक हमें हमारी बुराइयों से अवगत कराता है। उन बुराइयों को जानकर हम उन्हें दूर कर लेते हैं। इस प्रकार हमारा तन-मन पवित्र हो जाता है।

प्रश्न 8 : **'साखी' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने पाठ्यक्रम में संकलित कबीर की साखियों का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का तद्भव रूप है। यह शब्द साक्ष से बना है, जिसका अर्थ है–प्रत्यक्ष ज्ञान या अनुभवजन्य ज्ञान। यह प्रत्यक्ष ज्ञान एक गुरु अपने शिष्य को प्रदान करता है। पाठ्यक्रम में संकलित कबीर की साखियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवन-मूल्यों की शिक्षा देना है।

प्रश्न 9 : **कबीर ने कस्तूरी मृग का उदाहरण क्यों दिया है?**

उत्तर : कस्तूरी मृग का उदाहरण देकर कबीर इस सत्य को समझाना चाहते हैं कि ईश्वर का निवास कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे हृदय में ही है। हम उसे इसलिए नहीं देख पाते; क्योंकि जिस प्रकार कस्तूरी तो हिरण की नाभि में होती है, लेकिन वह उसे वन में ढूँढ़ता फिरता है, उसी प्रकार हम भी ईश्वर को अपने हृदय में न देखकर मंदिर, मस्ज़िद और तीर्थ स्थानों पर ढूँढ़ते फिरते हैं। अतः कबीर बताना चाहते हैं कि ईश्वर को सदैव अपने हृदय में खोजना चाहिए।

प्रश्न 10 : कबीर के हिसाब से 'मैं' और 'हरि' दोनों एक साथ क्यों नहीं रह सकते हैं?

उत्तर : कबीर के हिसाब से 'मैं' और 'हरि' एक स्थान पर नहीं रह सकते। 'मैं' का अर्थ है–अहंकार और 'हरि' का अर्थ है–ईश्वर। कबीर कहते हैं कि जब तक मनुष्य के मन में अहंकार होता है, तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती और जब ईश्वर-प्राप्ति हो जाती है तो उसके मन में अहंकार नहीं रहता।

प्रश्न 11 : कबीर की किसी साखी के आधार पर बताइए कि कबीर किन जीवन-मूल्यों को मानव के लिए आवश्यक मानते हैं?

उत्तर : कबीर की प्रत्येक साखी जीवन-मूल्यों के प्रति प्रेरित करती है; जैसे मधुर वाणी का महत्त्व बताते हुए कबीर ने उसे सबके लिए आवश्यक माना है। वह स्वयं को और दूसरों को शीतलता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त कबीर ने अहंकार और बाह्याडंबरों का त्याग करने, निंदक को पास रखने तथा प्रेम और अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त करने की बात कही है।

प्रश्न 12 : कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कबीर की साखियों की भाषा सरस और सधुक्कड़ी है। उसमें ब्रजभाषा, खड़ीबोली, अवधी, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी-फ़ारसी आदि भाषाओं के शब्दों का मेल है। उनकी साखियों में अलंकारों का आडंबर नहीं है। इनमें अनुप्रास और रूपक आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। भाषा भावाभिव्यक्ति में पूर्णतः समर्थ है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' कहा है। उनके अनुसार–"कबीर ने अपनी बात को जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया।"

प्रश्न 13 : मन का आपा खोने का आशय स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : मन का आपा खोने का आशय मन में स्थित अहंकार के भाव को समाप्त करना है; क्योंकि अहंकार के नष्ट हुए बिना मनुष्य के मुख से मधुर वाणी नहीं निकल सकती।

प्रश्न 14 : विरहरूपी सर्प कबीर के अनुसार, कौन है और मंत्र किसे कहा गया है? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : कबीर के अनुसार ईश्वर-भक्त का ईश्वर से मिलन न होने की तड़प (दुख) ही विरहरूपी सर्प है। जिस प्रकार सर्प का काटा व्यक्ति तड़पता है और अंत में या तो पागल हो जाता है, या प्राणों को त्याग देता है, उसी प्रकार सच्चा भक्त ईश्वर के वियोग में या तो प्राण त्याग देता है या उन्मत्त हो जाता है। 'मंत्र' ईश्वर-मिलन के उपाय को कहा गया है।

प्रश्न 15 : कबीर ने ईश्वर का निवास कहाँ बताया है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : कबीर ने ईश्वर का निवास प्रत्येक जीव के हृदय में अर्थात् सृष्टि के कण-कण में बताया है। व्यक्ति उसे बाहर ढूँढ़ता है, इसलिए वह ईश्वर को देख नहीं पाता।

प्रश्न 16 : अपनी एक साखी में कबीर अपना घर जलाने की बात कहते हैं। क्या अपना घर जलाना आपकी दृष्टि में उचित है?

उत्तर : कबीर ने अपनी साखी में कहा है कि हमने मुराड़ा हाथ में लेकर अपना घर जला दिया है। अब उनका घर भी जल जाएगा, जो हमारे साथ चलेंगे। हमारी दृष्टि में कबीर का यह कथन उचित है; क्योंकि यहाँ घर माया-मोह और विषय-वासनाओं का प्रतीक है। जब तक मनुष्य माया-मोह और विषय-वासनाओं में फँसा रहेगा, तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। 'मुराड़ा' भक्ति का प्रतीक है। माया-मोह और विषय-वासनाओं को भक्ति से ही समाप्त किया जा सकता है। मुराड़ा लेकर घर जलाने से कबीर का आशय यह है कि मैंने भक्ति की मशाल से विषय-वासनाओं को भस्म कर दिया है और मैं ईश्वर का भक्त बन चुका हूँ। अब जो मेरे संपर्क में आएगा, उसे भी मैं भक्ति के रंग में रँग दूँगा। इस प्रकार कबीर का घर जलाने की बात पूर्णतः उचित है।

प्रश्न 17 : कबीर ने अपनी साखियों में किन नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है?

उत्तर : कबीर ने अपनी साखियों में निम्नलिखित नैतिक मूल्य प्रस्तुत किए हैं–

(i) मनुष्य को सदैव मधुर वचन बोलने चाहिए; क्योंकि यह वक्ता और श्रोता दोनों के लिए सुखदायी होते हैं।

(ii) ईश्वर को आडंबरों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

(iii) अहंकारी को कभी ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती; क्योंकि अहंकार और ईश्वर परस्पर विरोधी हैं।

(iv) व्यक्ति विषय-भोगों में सुख की अनुभूति करता है, जबकि वास्तविक सुख ईश्वर-भक्ति में है।

(v) निंदकों का जीवन में बड़ा महत्त्व है; क्योंकि वे हमारे आचरण को निर्मल करने का साधन हैं।

(vi) ग्रंथों को पढ़ने से ज्ञान प्राप्त नहीं होता, बल्कि ईश्वर का नाम जपने से प्राप्त होता है।

(vii) ईश्वर की भक्ति माया-मोह और विषय-वासनाओं को दग्ध कर देती है।

प्रश्न 18 : 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ' पंक्ति का आप क्या अर्थ समझते हैं? प्रेम का एक अक्षर सभी ग्रंथों से किस प्रकार भारी है, अपने जीवन के एक अनुभव के आधार पर स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ यह है कि बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ने से कोई ज्ञानी या पंडित नहीं बन सकता, बल्कि जिसने 'प्रेम' शब्द का अर्थ समझ लिया है और उसे अपने जीवन में उतार लिया है, वही ज्ञानी और पंडित है। उसी का जीवन सार्थक है। हमारी कॉलोनी के एक कोने में मज़दूर का एक परिवार झुग्गी में रहता है। वह कॉलोनी में होने वाले निर्माण-कार्य में मज़दूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता है। एक दिन बहुत ज़ोरदार वर्षा हुई और 24 घंटे तक होती रही। मज़दूर की झुग्गी में पानी भर गया। उसके तीन छोटे-छोटे बच्चे भी थे। वह अपने बच्चों और पत्नी को लेकर कई लोगों के घरों में गया और वर्षा रुकने तक थोड़ी-सी जगह माँगी, लेकिन किसी ने उसे आश्रय नहीं दिया। वह मेरे घर भी आया। उसकी दशा देखकर मैंने अपने पापा जी से पूछे बिना ही उसे अपने गैराज़ में रहने के लिए कह दिया। उसने मुझे बहुत दुआएँ दीं। वर्षा रुकने के एक दिन बाद वह अपनी झुग्गी में चला गया। वह छोटा-सा उपकार करके मुझे जो सुख और संतुष्टि मिली, वह अवर्णनीय है। मुझे अनुभव हुआ कि मानव-सेवा से बढ़कर कोई भक्ति नहीं है।

प्रश्न 19 : कबीर के दोहे के आधार पर कस्तूरी की उपमा को स्पष्ट कीजिए। मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए? स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2020)***

उत्तर : कस्तूरी एक सुगंधित पदार्थ होता है, जो एक विशेष प्रकार के मृग की नाभि में पाया जाता है। वह मृग इस बात से अनभिज्ञ होता है और उस सुगंधित पदार्थ (कस्तूरी) को ढूँढ़ने के लिए वन में इधर-उधर दौड़ता फिरता रहता है। ईश्वर प्राप्ति के विषय में मनुष्य की भी यही दशा है। ईश्वर सब प्राणियों के अंदर विद्यमान है, लेकिन मनुष्य उसे प्राणियों में और स्वयं अपने अंदर न ढूँढ़कर मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों आदि स्थानों पर ढूँढ़ता फिरता है। यही कारण है कि मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। यदि मनुष्य को ईश्वर को प्राप्त करना है तो उसे आडंबर छोड़कर अपने अंतःकरण में ईश्वर को देखने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से उसे ईश्वर की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी।